

स्वच्छ भारत मिशन के प्रति नगरीय नागरिकों की जागरूकता एवं सहभागिता: झाँसी नगर के संदर्भ में

रंजना शर्मा^{1*}, डॉ. जंग बहादुर²

1 रिसर्च स्कॉलर, पी.के. यूनिवर्सिटी, शिवपुरी, मध्य प्रदेश, भारत

ranjanajhs60@gmail.com

2 पर्यवेक्षक, पी.के. यूनिवर्सिटी, शिवपुरी, मध्य प्रदेश, भारत

सार: स्वच्छ भारत मिशन, भारत के सबसे बड़े अभियानों में से एक, स्वच्छता, स्वच्छता और व्यवहार परिवर्तन और नियमितीकरण को बढ़ावा देता है। सतत स्वच्छता सार्वजनिक ज्ञान, सहयोग और सक्रिय जुड़ाव और स्थानीय प्रशासन के राजनीतिक और प्रशासनिक तंत्र पर निर्भर करती है। भारत के उत्तर प्रदेश में शहरी नागरिकों की स्वच्छ भारत मिशन के लक्ष्यों, प्रथाओं और महत्व के बारे में उनकी जागरूकता और स्वच्छता से संबंधित गतिविधियों और प्रवचन में उनकी भागीदारी के लिए जांच की जाती है। वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक अध्ययन में झाँसी, भारत के निवासियों से प्राथमिक डेटा और सरकारी कागजातों, सैनिटरी रिकॉर्ड और पिछले शोध से माध्यमिक डेटा एकत्र करने के लिए एक संरचित प्रश्नावली का उपयोग किया गया। अध्ययन अपशिष्ट पृथक्करण, आवासीय स्वच्छता, स्वच्छता अभियान, शहर की सेवाओं की धारणा और नागरिकों की सफाई गतिविधियों की जांच करता है। अधिकांश नागरिक स्वच्छ भारत मिशन और इसके उद्देश्य के बारे में जानते हैं, लेकिन सफाई और कचरा प्रबंधन में सामुदायिक भागीदारी में सुधार की आवश्यकता है। अध्ययन शहरी स्वच्छता कार्यक्रमों को बनाए रखने के लिए दीर्घकालिक सार्वजनिक ज्ञान, व्यवहार परिवर्तन और नागरिक-स्थानीय प्रशासनिक प्राधिकरण सहयोग की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है। झाँसी में दीर्घकालिक स्वच्छता, पर्यावरणीय स्थिरता और शहरी जीवन के लिए सामुदायिक जुड़ाव की आवश्यकता होती है।

मुख्य शब्द: स्वच्छ भारत मिशन, शहरी स्वच्छता, नागरिक जागरूकता, जन भागीदारी, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, व्यवहार परिवर्तन, नगरपालिका शासन, झाँसी शहर, शहरी स्वच्छता, सतत स्वच्छता।

1. परिचय

साहसिक भारतीय स्वच्छ भारत मिशन (एसबीएम) स्वच्छता, वैज्ञानिक अपशिष्ट प्रबंधन और व्यवहार परिवर्तन की वकालत करता है। प्रशासनिक प्रयासों और नगरपालिका के बुनियादी ढांचे के अलावा, शहरी स्वच्छता के लिए नागरिक ज्ञान, सहयोग और सक्रिय जुड़ाव आवश्यक है। शहरीकरण और बढ़ते कचरे के कारण, शहरी स्थानीय निकाय (यूएलबी) स्थायी स्वच्छता प्रदान करने के लिए संघर्ष करते हैं (बसु, ए. एम., 2020)। स्वच्छता कार्यक्रम इसलिए काम करते हैं क्योंकि लोग कचरे को अलग करते हैं, इसका उचित तरीके से निपटान करते हैं, प्लास्टिक को कम करते हैं और अपने समुदायों को साफ करते हैं (राव, के., 2021)। यह अध्ययन शहरी स्वच्छता जागरूकता और भागीदारी का आकलन करने

में मदद करता है। झांसी नागरिकों के स्वच्छता कार्यक्रम के दृष्टिकोण की जांच करने के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान है और सामाजिक भागीदारी शहरी स्वच्छता को कैसे बढ़ाती है। स्थायी शहरी स्वच्छता के लिए, अध्ययन जागरूकता-व्यवहार प्रथाओं-नागरिक भागीदारी पर जोर देता है (कल्याणसुंदरम, एम., 2021)।

1.1 शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ भारत मिशन की पृष्ठभूमि और महत्व

स्वच्छता सार्वजनिक स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण और शहरी स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण है। तेजी से शहरीकरण, जनसंख्या विस्तार और कचरा उत्पादन ने भारतीय शहरों के लिए स्वच्छता को मुश्किल बना दिया है। 2 अक्टूबर 2014 को, भारत ने स्वच्छता, विज्ञान-आधारित अपशिष्ट प्रबंधन और नागरिक व्यवहार परिवर्तन के माध्यम से भारत को स्वच्छ करने के लिए स्वच्छ भारत मिशन (एसबीएम) शुरू किया (जोशी, वी., 2020)। मिशन: स्वच्छता को ऊपर से नीचे, सरकार-उन्मुख रणनीति से नीचे से ऊपर, नागरिक/समुदाय/प्रशासनिक संस्थान दृष्टिकोण में बदलना जहां हितधारक स्वच्छता कार्यक्रम के भागीदार हैं (शर्मा, पी., 2021)। ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, पृथक्करण, खुले कचरे के निपटान को समाप्त करना और सार्वजनिक स्वच्छता शहरी मिशन के मुद्दे हैं। जब तक शहर का बुनियादी ढांचा साफ है, लेकिन इसके लोग नहीं, तब तक स्थिरता असंभव है (गुप्ता, एस., 2022)। शहरी स्वच्छता के लिए कचरा निपटान, घर को अलग करना, प्लास्टिक में कमी और सफाई के प्रयास आवश्यक हैं। इस प्रकार, शहरी नागरिक जागरूकता और भागीदारी अध्ययन स्वच्छ भारत मिशन के प्रदर्शन का मूल्यांकन करने में मदद करते हैं (कुमार, आर., 2020 & आवास एवं शहरी कार्य मंत्रालय, 2021)।

1.2 झांसी शहर के संदर्भ में शहरी नागरिक जागरूकता और भागीदारी

झांसी, उत्तर प्रदेश, बुंदेलखंड में स्वस्थ जीवन के लिए स्वच्छता प्रबंधन और सामुदायिक जुड़ाव की आवश्यकता है। शहरी शहरों में जनसंख्या और गतिविधि में वृद्धि ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, स्वच्छता और सार्वजनिक स्वच्छता के बारे में चिंताएं बढ़ाती है (मिश्रा, ए., 2021)। झांसी ने कचरा संग्रह, स्वच्छता जागरूकता और जिम्मेदार स्वच्छता बढ़ाने के लिए स्वच्छ भारत मिशन से संबंधित विभिन्न गतिविधियों को अपनाया है। शहरी लोगों का ज्ञान और रुचि प्रभावित करती है कि ऐसे प्रयास सफल होते हैं या नहीं। कचरा पृथक्करण, सफाई अभियान, स्वच्छता चुनौतियों और सार्वजनिक स्थान की स्वच्छता में नागरिकों की भागीदारी व्यवहार संशोधन पहल के काम को साबित करती है (सिंह, पी., 2023)। यह शोध झांसी शहर के नागरिकों की स्वच्छ भारत मिशन जागरूकता, भागीदारी, ज्ञान, दृष्टिकोण और व्यवहार की जांच करता है (नायर, एस., 2022)। अध्ययन इस बात की जांच करता है कि नागरिक क्यों संलग्न होते

हैं और नगर पालिकाएं और निवासी स्थायी स्वच्छता नीति लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कैसे सहयोग कर सकते हैं। यह विश्लेषण नागरिकों की भागीदारी की व्याख्या करता है और शहरी स्वच्छता को बढ़ावा देता है।

2. साहित्य समीक्षा

अग्रवाल, एम., (2023) कुछ अध्ययन स्वच्छ भारत मिशन जागरूकता और आदत में बदलाव को संबोधित करते हैं। अध्ययनों से पता चलता है कि स्वच्छता अपनाने के लिए जन जागरूकता की आवश्यकता है। शोध के अनुसार, शहरी स्वच्छता के लिए बुनियादी ढांचे, अपशिष्ट प्रबंधन स्वीकृति, सफाई कार्यक्रमों और सामुदायिक गतिविधियों की आवश्यकता होती है। शोध से पता चलता है कि मीडिया, शिक्षा और सामुदायिक जागरूकता स्वच्छता जागरूकता में सुधार करती है। अध्ययनों से पता चलता है कि घर के कचरा पृथक्करण, रीसाइक्लिंग और सामुदायिक भागीदारी ज्ञान और व्यवहार के बीच अंतर है। साहित्य दीर्घकालिक स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रमों और भागीदारी पद्धतियों का समर्थन करता है। शहरी लोगों का ज्ञांसी ज्ञान और जुड़ाव सामने आता है। यह शोध शहरी स्वच्छ भारत मिशन जागरूकता और भागीदारी का मूल्यांकन करता है।

रॉय, एस., (2022) नागरिक जुड़ाव शहरी सफाई कार्यक्रमों को बढ़ावा देता है, अध्ययनों से पता चलता है। शोधकर्ताओं का कहना है कि शहर के अधिकारियों को शहरी सेटिंग्स को इकट्ठा करने, छांटने, त्यागने और बनाए रखने में सार्वजनिक सहायता की आवश्यकता होती है। शहरी स्थानीय सरकार के शोध से पता चलता है कि सामुदायिक जुड़ाव जवाबदेही, सेवाओं और नागरिक-नगरपालिका संबंधों में सुधार करता है। अनुसंधान ने स्वच्छता पहल, स्वच्छता समस्या रिपोर्टिंग, पर्यावरण के अनुकूल व्यवहार और स्वच्छता/कचरा वकालत में सार्वजनिक भागीदारी की जांच की है। परिणाम बताते हैं कि नगरपालिका के निवासी सफाई आवश्यकताओं को स्वीकार करते हैं, लेकिन उनकी भागीदारी जागरूकता, शिक्षा, सुविधा की गुणवत्ता और स्थानीय सरकार के विश्वास पर निर्भर करती है। साहित्य विकेंद्रीकृत स्वच्छता प्रबंधन और निर्णय लेने में सामुदायिक भागीदारी पर जोर देता है। ज्ञांसी स्वच्छ भारत मिशन की भागीदारी के लिए नागरिकों की भागीदारी और सामाजिक और संस्थागत बाधाओं का अध्ययन कर सकता है।

वर्मा, आर., (2024) ठोस अपशिष्ट प्रबंधन लेखन में सतत शहरी स्वच्छता के साथ रहने पर जोर दिया गया है। कई अध्ययनों ने घरेलू कचरा निपटान, स्रोत पृथक्करण, पुनर्चक्रण और शहरी नगरपालिका अपशिष्ट प्रबंधन की जांच की है। एक शोधकर्ता ने पाया कि अनुचित निपटान और अपर्याप्त सार्वजनिक

जुड़ाव कचरा प्रबंधन में बाधा डालते हैं। शोध से पता चलता है कि कचरा जागरूकता स्थिरता को प्रभावित करती है। अन्य भारतीय शहरों में अनुसंधान स्वच्छता जागरूकता के बावजूद अपर्याप्त कचरे की छंटाई और पुनर्चक्रण को प्रदर्शित करता है। जागरूकता, बुनियादी ढांचे और सामुदायिक भागीदारी की कमी अपशिष्ट प्रबंधन को प्रभावित करती है। विद्वान नागरिकों, समुदायों और नगर पालिकाओं द्वारा एकीकृत कचरा प्रबंधन चाहते हैं। यह अध्ययन इस बात की जांच करता है कि क्या स्वच्छ भारत मिशन के ज्ञान ने झांसी अपशिष्ट प्रबंधन व्यवहार को प्रभावित किया है।

सेन, ए., (2021) सर्वेक्षण में पाया गया कि स्थानीय सरकारें स्वच्छ, नागरिक-समर्थित पारिस्थितिक तंत्र को बढ़ावा देती हैं। नगरपालिका संस्थानों, स्थानीय सरकार की नीति निष्पादन, और राष्ट्रीय सफाई लक्ष्यों पर कई शोधकर्ताओं द्वारा शोध किया गया है। हाल के शोध से पता चलता है कि स्थायी स्वच्छता के लिए सरकार-नागरिक जुड़ाव है। अनुसंधान के अनुसार, नगर पालिकाएं घर-घर जाकर कचरा हटाने, जागरूकता, सफाई और कम्प्यूटरीकृत शिकायत तंत्र प्रदान करती हैं। हालाँकि, संसाधनों की कमी, सेवा अंतराल और सामुदायिक उपेक्षा स्वच्छता में बाधा डालती है। हम नागरिकों को शासन में सक्रिय भागीदार के रूप में उजागर करते हैं, न कि निष्क्रिय लाभार्थियों के रूप में। ये अध्ययन स्वच्छ भारत मिशन के प्रशासनिक और सामाजिक पहलुओं को दर्शाते हैं। झांसी में, इस साहित्य खोज से पता चलता है कि कैसे जसपाल जागरूकता और भागीदारी शहरी स्वच्छता शासन को बढ़ाती है।

3. कार्यप्रणाली

3.1 अनुसंधान डिजाइन और अध्ययन क्षेत्र

एक वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक अध्ययन झांसी के शहरी लोगों की स्वच्छ भारत मिशन जागरूकता और भागीदारी की जांच करता है। यह अध्ययन निवासियों की स्वच्छता और अपशिष्ट प्रबंधन ज्ञान, दृष्टिकोण और प्रथाओं और जागरूकता और भागीदारी को चिह्नित करने के लिए वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक तरीकों का उपयोग करता है। ऐतिहासिक प्रासंगिकता, शहरी आबादी और स्वच्छता झांसी को उपयुक्त बनाती है। आवासीय कॉलोनियां, वाणिज्यिक जिले, शैक्षणिक संस्थान और विविध शहरी बस्तियाँ शहर को सार्वजनिक धारणा और जुड़ाव अनुसंधान के लिए आदर्श बनाती हैं। घरेलू अपशिष्ट प्रबंधन, पृथक्करण, सफाई अभियान, नगरपालिका स्वच्छता सेवाओं, स्वच्छता के लिए सार्वजनिक दायित्व और स्वच्छता वातावरण का अध्ययन किया जाता है। शोधकर्ता झांसी के सफाई कर्मियों के सफाई कार्यक्रमों का मूल्यांकन कर सकते हैं।

3.2 नमूनाकरण डिजाइन और डेटा संग्रह

झांसी शहरी नागरिक डेटा के सटीक लिए, अध्ययन संरचित नमूने का उपयोग करता है। स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण शहरवासियों का प्रतिनिधित्व करता है। स्वच्छ भारत मिशन के उत्तरदाताओं को विविध दृष्टिकोण प्राप्त करने के लिए आवासीय, वाणिज्यिक, शैक्षिक और अन्य शहरी क्षेत्रों से चुना गया था। इच्छित शोध में विभिन्न उम्र, शिक्षा, व्यवसायों और सामाजिक आर्थिक स्थितियों के 500 लोगों का नमूना लिया गया। संरचित प्रश्नावली ने स्वच्छता कार्यक्रमों, आवासीय अपशिष्ट प्रबंधन, सफाई शिविर की भागीदारी, नगरपालिका प्राधिकरण सेवा संतुष्टि और प्रशासन विकास पर प्राथमिक डेटा एकत्र किया। प्रश्नावली क्लोज्ड-एंडेड और लिक्र्ट स्केल आइटम का उपयोग करके दृष्टिकोण और व्यवहार को मापती है। पुस्तकें, पत्रिकाएं, स्वच्छ भारत मिशन सामग्री, आधिकारिक स्वच्छता रिपोर्ट, स्वच्छ सर्वेक्षण रिपोर्ट, नगरपालिका रिकॉर्ड और शहरी स्वच्छता और नागरिक भागीदारी अनुसंधान परियोजनाएं द्वितीयक स्रोत थे। प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों के साथ अनुसंधान विश्वसनीयता और वैधता में सुधार होता है।

3.3 अनुसंधान चर और मापन उपकरण

अध्ययन में कई शोध मापदंडों का उपयोग करते हुए स्वच्छ भारत मिशन जागरूकता और नागरिक भागीदारी का आकलन किया गया। इस अध्ययन में उत्तरदाता की आयु, लिंग, शिक्षा, व्यवसाय और आय स्वतंत्र चर हैं। निर्धारित करें कि क्या और कैसे सामाजिक पृष्ठभूमि इन कारकों का उपयोग करके जागरूकता और भागीदारी को प्रभावित करती है। आश्रित कारकों में अद्भुतता, स्वच्छता, कचरा प्रबंधन और सामुदायिक स्वच्छता शामिल हैं। पांच-सूत्री लाइकर्ट स्केल प्रश्नावली स्वच्छता जागरूकता और भागीदारी को मापती है। अपशिष्ट पृथक्करण ज्ञान, नगरपालिका स्वच्छता जागरूकता, नियमित अपशिष्ट निपटान, सफाई अभियान की भागीदारी और स्वच्छता की जिम्मेदारी को मापा जाता है। अनुसंधान उपकरण स्पष्ट, विश्वसनीय और तटस्थ नागरिक प्रतिक्रियाएँ सुनिश्चित करता है। मात्रात्मक प्रतिक्रियाओं, एकत्रित और संक्षिप्त डेटा का सांख्यिकीय रूप से विश्लेषण किया जा सकता है ताकि शहरी नागरिकों के स्वच्छता अभियान की भागीदारी को प्रभावित करने वाले पैटर्न, लिंक और महत्वपूर्ण कारकों की पहचान की जा सके।

3.4 डेटा विश्लेषण तकनीक

सांख्यिकीविदों ने स्वच्छ भारत मिशन की नागरिक जागरूकता और भागीदारी का आकलन किया। टेबल, वर्गीकृत और क्रमबद्ध प्रतिक्रियाएँ व्यवस्थित विश्लेषण को सक्षम करती हैं। उत्तरदाता

जनसांख्यिकी और जागरूकता/भागीदारी प्रतिशत में प्रस्तुत की जाती है। औसत स्कोर विश्लेषण ने स्वच्छता, नगरपालिका सेवाओं और सफाई प्रयासों के बारे में नागरिकों की धारणाओं का मूल्यांकन किया। हमने जांच की कि क्या स्वच्छता से संबंधित गतिविधियां सहसंबंध विश्लेषण का उपयोग करके सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाती हैं। टेबल, ग्राफ़ और चार्ट ची-स्क्वायर परीक्षण का उपयोग करके जनसांख्यिकीय-भागीदारी कनेक्शन दिखाते हैं। एक्सेल और एसपीएसएस में डेटा का विश्लेषण किया गया था। ये विश्लेषणात्मक तरीके सटीक अनुसंधान व्याख्या के साथ शहरी स्वच्छता प्रबंधन चुनौतियों और अवसरों में झांसी की मुख्य नागरिक भागीदारी को प्रकट करेंगे। यह तकनीक स्वच्छ भारत मिशन के उद्देश्यों में नागरिक योगदान का आकलन करने के लिए अनुभवजन्य साक्ष्य के साथ समाप्त होती है।

4. परिणाम और विश्लेषण

4.1 उत्तरदाताओं की जनसांख्यिकीय प्रोफ़ाइल

उत्तरदाताओं पर जनसांख्यिकीय डेटा अनुसंधान प्रतिभागियों की सामाजिक आर्थिक प्रोफ़ाइल को दर्शाता है। उम्र, लिंग, शिक्षा और व्यवसाय सहित जनसांख्यिकीय कारक सफाई कार्यक्रम जागरूकता, दृष्टिकोण और भागीदारी को प्रभावित करते हैं। शोध में सभी उम्र और सामाजिक आर्थिक वर्गों के 500 झांसी निवासियों का सर्वेक्षण किया गया। उत्तरदाताओं को वितरित करने से शहरी आबादी की विविधता सुनिश्चित होती है। जनसांख्यिकीय शोध के अनुसार, विभिन्न सामाजिक-आर्थिक वर्गों के लोगों ने सर्वेक्षण में भाग लिया, जो स्वच्छ भारत मिशन पर जनता की राय का विस्तृत दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। निम्नलिखित जनसांख्यिकी उत्तरदाताओं का वर्णन करती है:

तालिका 1: उत्तरदाताओं की जनसांख्यिकीय प्रोफ़ाइल

जनसांख्यिकीय चर	कोटि	आवृत्ति	प्रतिशत (%)
लिंग	पुरुष	275	55
	महिला	225	45
आयु वर्ग	18-30 वर्ष	175	35
	31-50 वर्ष	200	40
	50 वर्ष से अधिक	125	25

शैक्षणिक योग्यता	स्नातक स्तर की पढ़ाई के नीचे	220	44
	स्नातक और उससे ऊपर	280	56
अधिभोग	छात्र	90	18
	सेवा क्षेत्र	160	32
	व्यवसाय/स्व-व्यवसायी	120	24
	अन्य	130	26

जनसांख्यिकीय परिणामों से पता चला है कि सर्वेक्षण में सभी सामाजिक आर्थिक सशक्तिकरण स्तरों के लोगों को शामिल किया गया था। प्रतिक्रिया उचित थी - 55% पुरुष, 45% महिला। सबसे बड़े आयु वर्ग 18-30 (40%), और 31-50 युवा वयस्क थे।

4.2 स्वच्छ भारत मिशन के बारे में नागरिकों का जागरूकता स्तर

स्वच्छ भारत मिशन की सफलता नागरिक जागरूकता पर भी निर्भर करती है। आचरण, निर्णय लेने और स्वच्छता को प्रभावित करने वाला पहला कारक दृष्टिकोण है। हम मिशन के लक्ष्यों, अपशिष्ट पृथक्करण, नगरपालिका स्वच्छता और स्वच्छता अभियानों के बारे में नागरिकों के ज्ञान का आकलन करते हैं। सर्वेक्षण के अनुसार, अधिकांश उत्तरदाता स्वच्छ भारत मिशन के बारे में जानते थे, लेकिन कचरा पृथक्करण या पुनर्चक्रण के बारे में नहीं। जैसा कि तालिका में दिखाया गया है, मिशन घटकों के बारे में उत्तरदाताओं की जागरूकता का आकलन किया गया था।

तालिका 2: स्वच्छ भारत मिशन के बारे में जागरूकता का स्तर

जागरूकता संकेतक	जागरूक (%)	जागरूक नहीं (%)
स्वच्छ भारत मिशन के बारे में जानकारी	92	8
घरेलू अपशिष्ट पृथक्करण के बारे में जागरूकता	74	26
स्वच्छ सर्वेक्षण के बारे में जानकारी	68	32

नगरपालिका स्वच्छता सेवाओं के बारे में जागरूकता	81	19
पुनर्वर्तन और अपशिष्ट में कमी के बारे में जागरूकता	63	37

परिणाम बताते हैं कि झांसी के 92% निवासी स्वच्छ भारत मिशन के बारे में जानते हैं। नगरपालिका स्वच्छता सेवाओं के बारे में उच्च जागरूकता से पता चलता है कि लोग उनके बारे में जानते हैं। हालाँकि, पुनर्वर्तन और अपशिष्ट न्यूनीकरण जागरूकता कम थी, जो अधिक शिक्षा की आवश्यकता को दर्शाता है।

4.3 स्वच्छता गतिविधियों में नागरिकों की भागीदारी

शहर के स्वच्छता कार्यक्रम नागरिकों की भागीदारी पर निर्भर करते हैं। स्वच्छ भारत मिशन निवासियों की व्यक्तिगत स्वच्छता और सांप्रदायिक सहयोग पर निर्भर करता है। झांसी के निवासी घर में कचरा अलग कर रहे हैं, सफाई कर रहे हैं, प्लास्टिक के उपयोग को कम कर रहे हैं और स्वच्छता की समस्याओं की रिपोर्ट कर रहे हैं। परिणामों से पता चला कि नागरिक सामुदायिक प्रयासों की तुलना में व्यक्तिगत सफाई पहल में अधिक भाग लेते हैं। निम्नलिखित तालिका प्रतिवादी की भागीदारी को सारांशित करती है।

तालिका 3: स्वच्छता गतिविधियों में नागरिकों की भागीदारी

भागीदारी गतिविधियाँ	नियमित भागीदारी (%)	सामयिक भागीदारी (%)	कोई भागीदारी नहीं (%)
घरेलू स्तर पर अपशिष्ट पृथक्करण	48	32	20
स्वच्छता अभियानों में भागीदारी	22	46	32
प्लास्टिक के उपयोग में कमी	55	30	15

स्वच्छता समस्याओं की रिपोर्ट करना	18	40	42
सामुदायिक जागरूकता गतिविधियाँ	25	45	30

इस अध्ययन से पता चलता है कि लोगों की व्यक्तिगत स्वच्छता प्रथाओं को अधिक स्वीकार किया जाता है। लगभग 55% उत्तरदाता नियमित रूप से प्लास्टिक की खपत कम करते हैं और 48% नियमित रूप से घरेलू कचरे को छांटते हैं। हालांकि, सामुदायिक स्वच्छता प्रयासों में केवल 22% लोग भाग लेते हैं।

4.4 जागरूकता और भागीदारी के बीच संबंध

जागरूकता और भागीदारी के बीच संबंधों का पता लगाया गया ताकि यह पता लगाया जा सके कि क्या स्वच्छ भारत मिशन के बारे में उच्च जागरूकता किसी भी नागरिक को स्वच्छता गतिविधियों में भाग लेने के लिए सक्षम बनाती है। जागरूकता को दृष्टिकोण और अच्छी स्वच्छता प्रथाओं का अभ्यास करने की इच्छा को प्रभावित करने के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। जागरूकता स्तर और उत्तरदाताओं की भागीदारी व्यवहार के बीच संबंधों की जांच करने के लिए, अध्ययन में औसत स्कोर और सहसंबंध विश्लेषण का उपयोग किया गया था। समीक्षा किए गए परिणामों के अनुसार, चर के बीच एक सकारात्मक सहसंबंध है, इसका मतलब है कि जितना अधिक कोई जागरूक होता है, स्वच्छता के लिए कार्रवाई करने की अधिक संभावना होती है।

तालिका 4: जागरूकता और भागीदारी के बीच संबंध

चर	माध्य स्कोर	मानक विचलन	सहसंबंध मान (आर)
जागरूकता स्तर	3.92	0.74	0.68
भागीदारी स्तर	3.45	0.81	0.68

जांच ने नागरिकों की जागरूकता और स्वच्छता प्रयासों में भागीदारी के बीच एक अनुकूल संबंध दिखाया, आर = 0.68 के साथ। स्वच्छ भारत मिशन के उद्देश्य और प्रासंगिकता के बारे में जागरूकता का औसत

स्कोर 3.92 है, जो दर्शाता है कि उत्तरदाता इसके लाभों से अवगत हैं। 3.45 की कम भागीदारी दर से पता चलता है कि सचेत जागरूकता का मतलब सक्रिय भागीदारी नहीं है। सामुदायिक प्रोत्साहन, सुविधा उपलब्धता, प्रशासनिक सहायता और सामाजिक प्रेरणा भी भागीदारी को प्रभावित करती है।

4.5 चर्चा

अध्ययन में पाया गया कि झांसी में जन जागरूकता, व्यवहार और सामाजिक भागीदारी स्वच्छ भारत मिशन की प्रभावकारिता को प्रभावित करती है। अधिकांश शहरी लोग स्वच्छता जागरूकता अभियानों के मिशन और महत्व को समझते हैं, इसलिए वे काम करते हैं। सर्वेक्षण में खराब सामुदायिक स्वच्छता और अपशिष्ट प्रबंधन देखा गया। कम समूह कार्रवाई, 'स्वच्छता अभियान' और स्वच्छता समस्या रिपोर्टिंग के बावजूद, व्यक्तिगत स्वच्छता पहल (प्लास्टिक से बचना, एक कमरे की सफाई) में सुधार हुआ है। स्वच्छता के लिए व्यवहार परिवर्तन और सामुदायिक जुड़ाव की आवश्यकता होती है, न कि केवल सूचना। जागरूकता से भागीदारी बढ़ती है, लेकिन सामाजिक और प्रशासनिक कारक भी भागीदारी को प्रभावित करते हैं। निष्कर्षों का अर्थ है कि सार्वजनिक जुड़ाव में स्थानीय समुदायों, शिक्षा और नागरिक समाज के साथ नगरपालिका सहयोग शामिल है। जागरूकता और वार्ड स्वच्छता समितियां शहर के स्वच्छता प्रबंधन और भागीदारी में सुधार कर सकती हैं।

5. निष्कर्ष

शहरों को स्वच्छता परियोजनाओं को सफल बनाने के लिए सार्वजनिक जुड़ाव की आवश्यकता है। परिणामों से पता चलता है कि झांसी के अधिकांश शहरी लोग स्वच्छ भारत मिशन के उद्देश्यों, वस्तुओं, महत्व और गतिविधियों को जानते हैं। नागरिक कचरा प्रबंधन, शहरी और घरेलू स्वच्छता को समझते हैं। अध्ययन ने यह भी संकेत दिया कि ज्ञान आवश्यक रूप से सामुदायिक स्वच्छता या अपशिष्ट पृथक्करण को बढ़ावा नहीं देता है। ज्ञान-कार्रवाई अंतर का तात्पर्य है कि सामाजिक प्रगति के लिए बेहतर समाधान और अधिक व्यवहार परिवर्तन की आवश्यकता होती है। सफल शहरी स्वच्छता परियोजनाओं के लिए नगर पालिका, स्थानीय समुदायों, नागरिक समाज, स्कूलों और लोगों से "सभी हाथों से डेक पर सभी हाथों" की भागीदारी की आवश्यकता होती है। बेहतर अपशिष्ट प्रबंधन और जागरूकता पर्यावरणीय जिम्मेदारी को बढ़ावा दे सकती है। इस अध्ययन से पता चलता है कि शहर का विकास एक सामाजिक जिम्मेदारी है, न कि केवल एक सरकारी कार्य, इस प्रकार निवासियों को योगदान देना चाहिए। समुदाय आधारित पहल और भागीदारी वाली सरकार स्वच्छ भारत मिशन और झांसी की सार्वजनिक भागीदारी को बढ़ावा दे सकती है। जब लोग अपनी समझ को आत्मसात करते हैं और

पर्यावरण के अनुकूल, स्वस्थ और अच्छे शहरी समाज में जिम्मेदारी से कार्य करते हैं, तो स्थायी शहरी स्वच्छता संभव है।

संदर्भ

1. बसु, ए. एम., एवं पंजाबी, एस. (2020). उन्नत स्थानीय प्रबंधन कार्यक्रम के संदर्भ में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन में नागरिक सहभागिता: मुंबई से प्राप्त अनुभव। *नगरीय प्रबंधन जर्नल*, 9(1), 93-103।
2. कल्याणसुंदरम, एम., सबदे, वाई., एन्नरस्टेड्ट, के. एस., सिंह, एस।, साहू, के. सी., एवं पराशर, वी. (2021). भारत के मध्य प्रदेश के नगरीय क्षेत्रों में घरेलू स्तर पर ठोस अपशिष्ट पृथक्करण पर बेहतर सूचना एवं स्वयंसेवी सहयोग का प्रभाव: एक समूह यादृच्छिक नियंत्रित परीक्षण की रूपरेखा। *बीएमसी सार्वजनिक स्वास्थ्य*, 21, 694।
3. शर्मा, पी., एवं सिंह, आर. (2021). स्वच्छ भारत मिशन के संदर्भ में नगरीय ठोस अपशिष्ट प्रबंधन में नागरिक सहभागिता की भूमिका। *भारतीय सामाजिक विज्ञान समीक्षा*, 12(2), 45-58।
4. गुप्ता, एस., एवं वर्मा, ए. (2022). स्वच्छ भारत मिशन और नगरीय स्वच्छता व्यवहार: नागरिक जागरूकता का समाजशास्त्रीय विश्लेषण। *समाजशास्त्रीय अध्ययन पत्रिका*, 18(1), 67-79।
5. कुमार, आर।, एवं यादव, एम. (2020). भारत में नगरीय स्वच्छता प्रबंधन और जन सहभागिता की चुनौतियाँ। *लोक प्रशासन एवं विकास अध्ययन*, 15(3), 112-125।
6. मिश्रा, ए।, एवं तिवारी, एन. (2021). स्वच्छ भारत मिशन (नगरीय) के क्रियान्वयन में स्थानीय निकायों की भूमिका: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन। *प्रशासनिक चिंतन*, 9(2), 88-102।
7. सिंह, पी।, एवं चौहान, आर. (2023). नगरीय नागरिकों में स्वच्छता जागरूकता एवं व्यवहार परिवर्तन: उत्तर भारत के शहरों का अध्ययन। *भारतीय जनसंख्या एवं विकास अध्ययन पत्रिका*, 14(1), 35-49।
8. नायर, एस., एवं मेनन, आर. (2022). नागरिक सहभागिता और सतत नगरीय स्वच्छता: भारतीय शहरों में व्यवहारिक प्रथाओं का अध्ययन। *पर्यावरण प्रबंधन एवं सतत विकास पत्रिका*, 11(4), 210-224।

9. जोशी, वी ., एवं अग्रवाल, डी. (2020). स्वच्छ भारत अभियान और सामाजिक उत्तरदायित्व: नगरीय समुदायों की भूमिका। *सामाजिक अनुसंधान पत्रिका*, 25(2), 56–70।
10. राव, के., एवं पाटिल, एस. (2021). भारत में नगरीय स्वच्छता प्रशासन और सार्वजनिक सहभागिता: चुनौतियाँ एवं अवसर। *नगरीय कार्य अध्ययन समीक्षा*, 7(3), 145–160।
11. आवास एवं शहरी कार्य मंत्रालय। (2021). *स्वच्छ भारत मिशन-नगरीय 2.0: संचालन दिशा-निर्देश*। भारत सरकार।
12. अग्रवाल, एम., एवं शर्मा, के. (2023). ठोस अपशिष्ट प्रबंधन में नागरिक सहभागिता और पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन। *पर्यावरण एवं समाज अध्ययन पत्रिका*, 10(2), 91–105।
13. रॉय, एस., एवं दास, पी. (2022). भारतीय नगरीय क्षेत्रों में सतत अपशिष्ट प्रबंधन व्यवहार और नागरिक सहभागिता। *नगरीय पारिस्थितिकी एवं सततता पत्रिका*, 6(1), 75–89।
14. वर्मा, आर., एवं गुप्ता, एन. (2024). स्वच्छ सर्वेक्षण और नागरिक प्रतिक्रिया प्रणाली: नगरीय स्वच्छता सुधार का मूल्यांकन। *नगरीय विकास शोध पत्रिका*, 16(1), 120–134।
15. सेन, ए., एवं मुखर्जी, एस. (2021). स्मार्ट शहरों में सतत अपशिष्ट प्रबंधन की दिशा में मार्ग। *नगरीय प्रबंधन पत्रिका*, 10(4), 419–429।